P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-3* November- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

# मौर्य युग के आधुनिक इतिहास–लेखन में ब्राह्मण स्रोत सामग्री का विश्लेषणात्मक अध्ययन

**विकास चौधरी**
शोधार्थी,
इतिहास विभाग,
जय नारायण व्यास विश्वविधालय,
जोधपुर, राजस्थान

**सारांश**

मौर्यकालीन भारतीय इतिहास–लेखन के लिए साहित्यिक स्रोत सामग्री प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है जिनमें ब्राह्मण स्रोत सामग्री का महत्त्वपूर्ण योगदान है। इन ब्राह्मण स्रोत सामग्री से प्राप्त सूचनाएँ मौर्य युग के आधुनिक इतिहास–लेखन में उपयोगी सिद्ध होती है। इन ब्राह्मण स्रोतों में 'अर्थशास्त्र', 'पुराण', 'मुद्राराक्षस', 'राजतंरगिणी', 'कथासरित्सागर' आदि ग्रंथों को सम्मिलित किया गया है। इन ग्रंथों के अतिरिक्त हमें कुछ कथाएँ भी प्राप्त होती है जिनसे हमें नंद–चाणक्य–चन्द्रगुप्त के इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है। इन्हीं से संबंधित जानकारी 'महाभाष्य' व 'दशकुमारचरित' नामक ग्रंथों से भी प्राप्त होती है।

**मुख्य शब्द :** आधुनिक इतिहास–लेखन, ब्राह्मण साहित्यिक स्रोत, कौटिल्य कृत 'अर्थशास्त्र', 'पुराण', 'मुद्राराक्षस', 'राजतरंगिणी', 'महाभाष्य', वृषल, मौर्य वंशानुक्रम, आजीविक सम्प्रदाय, नंद–चाणक्य–चन्द्रगुप्त की कथाएँ, अशोक, बौद्ध धर्मावलम्बी, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक संस्थाएँ, पाटलिपुत्र, दास प्रथा, मौर्य कला।

**प्रस्तावना**

इतिहास समाज का दर्पण है किसी देश अथवा जाति के उत्थान–पतन, उत्कर्ष–अपकर्ष आदि की पूर्ण व्यवस्था इतिहास के पन्ने पलटने पर हमें भली–भाँति विदित हो जाती है। किसी देश को नष्ट करना हो तो उसके इतिहास और साहित्य को नष्ट कर दो वह शताब्दियों तक नहीं पनप सकेगा। यह बात भारतीय इतिहास के संबंध में भी दृष्टिगत होती है।

19वीं शताब्दी मुख्य रूप से तथ्यों की उपयोगिता पर बल देती है। ऐतिहासिक दृष्टि से मौर्य काल का न केवल राजनैतिक महत्त्व के लिए वरन् यह इतिहास–लेखन की नवीन विधाओं के प्रचलन के लिए भी महत्त्वपूर्ण रहा है।

मौर्यकालीन साहित्य स्रोत की उपलब्धता लेखनीय दृष्टिकोण एवं देश, काल और परिस्थितियों के अनुसार विभिन्न इतिहासकारों ने विभिन्न परिप्रेक्ष्य में लेखन किया है। इतिहास–लेखन की सबसे महत्त्वपूर्ण समस्या स्रोत सामग्री का अभाव दृष्टिगत होता है परन्तु मौर्यकालीन भारतीय इतिहास–लेखन हेतु इतिहासकारों के समक्ष प्रचुर साहित्यिक स्रोत सामग्री उपलब्ध है।

**अध्ययन का उद्देश्य**

प्राचीन भारतीय इतिहास–लेखन के क्षेत्र में स्रोत सामग्री का अभाव दृष्टिगत होता है परन्तु मौर्यकाल के अध्ययन के लिए हमारे पास स्रोतों की कमी नहीं है। भरतीय इतिहास में मौर्यकाल से पूर्व के युगों के अध्ययन में साक्ष्य ढूंढने के लिए बहुत दूर से और बिखरे हुए स्रोतों का सहारा लेना पड़ता है। इसकी तुलना में मौर्यकाल से संबंधित स्रोत सामग्री भरपूर मात्रा में उपलब्ध है। मौर्य काल से संबंधित ब्राह्मण साहित्यिक स्रोतों के आधार पर नंद–चाणक्य व चन्द्रगुप्त मौर्य से संबंधित इतिहास का वर्णन, बिन्दुसार तथा अशोक, अशोककालीन कला और संस्कृति, उत्तराधिकारी, प्रशासन व आर्थिक नियंत्रण आदि का आधुनिक इतिहास–लेखन की दृष्टि से तथ्य परख विश्लेषण करना है।

**साहित्यावलोकन**

श्रीराम गोयल ने अपने ग्रंथ 'कौटिल्य एण्ड मेगास्थेनिज', मेरठ, 1985 के अध्याय 1 व 2 में मौर्यकालीन इतिहास से संबंधित ब्राह्मण ग्रंथ 'अर्थशास्त्र' का विस्तृत विवेचन किया है। मौर्य युग के आधुनिक इतिहास–लेखन पर सर्वप्रथम कार्य शंकर गोयल ने अपने ग्रंथ 'प्राचीन भारत का आधुनिक इतिहास–लेखन', जोधपुर, 2000 के अध्याय 5 व 6 में किया है जिसमें उन्होंने ब्राह्मण साहित्य स्रोत सामग्री का भरपूर प्रयोग किया है।

श्रीराम गोयल ने अपने ग्रंथ 'प्राचीन भारत (320 ई. तक)', जोधपुर, 2007 में मौर्य काल के आधुनिक इतिहास–लेखन संबंधित विभिन्न पहलुओं का ब्राह्मण स्रोत के आधार पर विवेचनात्मक वर्णन प्रस्तुत किया है तथा इस ग्रंथ में एक परिशिष्ट के माध्यम से कौटिल्य प्रशासन–तंत्र का भी 'अर्थशास्त्र' के आधार पर वर्णन किया है।

'प्राचीन भारत', वाराणासी, 2010 नामक ग्रंथ में डॉ. राजबली पाण्डेय ने एक अतिरिक्त अध्याय के माध्यम से मौर्यकालीन समाज और संस्कृति पर प्रकाश डाला है।

'अशोक और मौर्य साम्राज्य का पतन', नामक ग्रंथ के प्रथम अध्याय में रोमिला थापर ने मौर्य काल के आधुनिक इतिहास–लेखन से संबंधित ब्राह्मण साहित्यिक स्रोतों के आधार पर मौर्य शासक अशोक के शासन का राजनैतिक व सामाजिक दृष्टिकोण से विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है।

रामशरण शर्मा द्वारा लिखित ग्रंथ 'प्रारंभिक भारत का परिचय' हैदराबाद, 2018 के अध्याय 19 में ब्राह्मण स्रोतों के आधार पर मौर्य शासन–व्यवस्था के महत्त्व का अध्ययन प्रस्तुत किया है।

उपरोक्त मौलिक स्रोतों, द्वितीयक स्रोतों एवं अन्य अध्ययन सामग्री के आधार पर प्रस्तुत शोध–पत्र में आधुनिक इतिहास–लेखन की दृष्टि से मौर्यकालीन ब्राह्मण स्रोतों की तथ्यपरक विवेचना की गई है।

**ब्राह्मण साहित्यिक स्रोत**

मौर्य काल के आधुनिक इतिहास–लेखन में ब्राह्मण परम्परा के साहित्यिक स्रोतों का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण योगदान है। इन्हीं ब्राह्मण स्रोतों के आधार पर इस युग को 'वैज्ञानिक' रूप में वर्णित करने में सहायक सिद्ध होते हैं। इन ब्राह्मण साहित्यिक स्रोतों में सर्वाधिक उल्लेखनीय पुराण हैं।

**मौर्यों की वंशावली**

प्राचीन भारतीय इतिहास से संबंधित जानकारी पुराणों में प्रायः अशुद्धियों से परिपूर्ण है, परन्तु इस मत पर संदेह नहीं किया जा सकता है कि इनका विवेचन करके प्राचीन भारतीय व मौर्य काल के राजनीतिक इतिहास विषयक बहुत–सी महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की जा सकती है। पुराणों में मौर्यों से संबंधित अनेक सूचनाएँ प्राप्त होती है जो निम्न है– नंदों का उन्मूलन, मौर्य वंश की स्थापना व चाणक्य का योगदान, तिथिक्रम आदि।[1]

मौर्य शासकों की वंशावली तथा कौटिल्य से संबंधित महत्त्वपूर्ण जानकारी हमें पुराणों से ही प्राप्त होती है।[2] पुराणों में चन्द्रगुप्त, बिन्दुसार और अशोक के शासन की अवधि के संबंध में जानकारी प्राप्त होती है कि उनका शासन काल क्रमशः 24, 28 और 36 वर्ष बताया गया है। सभी पुराण इस मत पर सहमत है कि मौर्य शासकों ने 137 वर्ष तक शासन किया था। पुराणों के अनुसार चन्द्रगुप्त, बिन्दुसार व अशोक ने 88 वर्षों तक शासन किया था तथा अशोक के उत्तराधिकारियों ने केवल 49 वर्ष तक शासक किया। 'ब्रह्माण्ड–पुराण' के अनुसार अशोक के बाद छः राजाओं ने तथा 'मत्स्य–पुराण' से अनुसार सात राजाओं ने शासन किया था।

'वायु–पुराण' व 'ब्रह्माण्ड–पुराण'[3] में यह वंशावली चन्द्रगुप्त 24 वर्ष, भद्रसार 25 वर्ष, अशोक 36 वर्ष, कुनाल 8 वर्ष, बन्धुपालित 8 वर्ष, इन्द्रपालित 10 वर्ष, देववर्मा 7 वर्ष, शतधनुष् 8 वर्ष तथा बृहद्रथ ने 7 वर्ष तक पृथिवी का भोग करेंगे। इन 9 मौर्य शासकों ने 137 वर्षों तक शासन किया है यह वर्णन प्राप्त होता है परन्तु इन समस्त राजाओं की अवधि का योग 133 वर्ष ही ज्ञात है।

'मत्स्य–पुराण' के अनुसार 10 शासकों ने 137 वर्ष मौर्य वंश में शासन किया था जो निम्न है– चन्द्रगुप्त, अशोक 36 वर्ष, अशोक का नप्ता 17 वर्ष, दशरथ 8 वर्ष, सम्प्रति 9 वर्ष, शतधन्वा 6 वर्ष तथा बृहद्रथ 7 वर्ष।[4] दशरथ का वर्णन 'मत्स्य–पुराण' में है। इसके अलावा हमें नागार्जुनी पहाड़ियों की गुफाओं से भी उसके अस्तित्व का प्रमाण प्राप्त होता है।[5]

'विष्णु–पुराण' के अनुसार मौर्य शासकों की संख्या 10 है जो निम्न है– चन्द्रगुप्त, बिन्दुसार, अशोक, सुयश[6], दशरथ, संगत, शालिशूक, सोमवर्मा, शतधन्वा व बृहद्रथ।[7]

पुराणों में पुष्यमित्र को 'सेनानी' और 'महाबलपराक्रमः' कहा गया है जिसने बृहद्रथ को समाप्त कर स्वयं राज्य प्राप्त कर लेने का उल्लेख किया गया है। मागध की यह क्रांति 184 ई.पू. में हुई थी।[8] इस प्रकार चन्द्रगुप्त 321 ई.पु. में मगध के राजसिंहासन पर आरूढ़ हुआ था परन्तु 137 वर्ष बाद 184 ई.पू. में बृहद्रथ की हत्या के साथ मौर्यों के शासन का अन्त हो गया था।[9]

**मुद्राराक्षस का वर्णन**

इतिहास व इतिहास–लेखन से संबंधित ग्रंथों में तिथिक्रम का विवाद सर्वत्र विद्यमान है ऐसा हमें विशाखदत्त के 'मुद्राराक्षस' के संबंध में थी दृष्टिगत होता है।[10] इतिहासकार एफ. डब्ल्यु. टॉमस ने इस ग्रंथ को प्रदत्त सूचनाओं एवं तथ्यों के आधार पर ऐतिहासिकता सिद्ध करने का प्रयास किया है तथा उनका तर्क है कि इसकी ऐतिहासिकता व प्रमाणिकता नंदों के उन्मूलन व राज्यारोहण से संबंधित चन्द्रगुप्त मौर्य की जानकारी आदि घटनाओं से सिद्ध होती है।

'मुद्राराक्षस' नामक ग्रंथ के अनुसार मौर्यों के नंदों से संबंध और उनके शूद्रत्व की धारण के प्रचलन में इस ग्रंथ का महत्त्वपूर्ण योगदान है। यद्यपि इस ग्रंथ का लेखक स्वयं विशाखदत्त यह नहीं मानता था कि मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त नंद वशोंत्पन्न या शूद्र था। इस ग्रंथ में चन्द्रगुप्त मौर्य के संबंध में जानकारी पूर्णतः स्पष्ट नहीं है। इस ग्रंथ में एक ओर चन्द्रगुप्त मौर्य को 'नन्दान्वय' कहा गया है जिससे दृष्टिगत होता है कि विशाखदत्त चन्द्रगुप्त को नन्द राजा का पुत्र मानता था।[11] परन्तु दूसरी ओर ऐसे शब्दों का प्रयोग किया गया है जिसके अनुसार वह नंद का अवैध पुत्र मानता है या चन्द्रगुप्त नन्द नरेश का पुत्र नहीं किसी प्रकार उसका पुत्रवत् हो गया था।

विशाखदत्त द्वारा चन्द्रगुप्त मौर्य को नंदों से भिन्न कुल का परन्तु उनसे घनिष्ठतः सम्बद्ध नंद राजा के पुत्र के समान मानता था। विशाखदत्त से अनुसार चन्द्रगुप्त हीनजातिय था क्योंकि उनके अनुसार नंद नरेश शूद्र न होकर 'प्रथितकुलजाः' और 'अभिजन' थे।[12]

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-3* November- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

चन्द्रगुप्त के लिए 'मुद्राराक्षस' में प्रयुक्त उपाधियों में 'वृषल' सर्वाधिक समस्या मूलक है। स्पष्टतः विशाखदत्त कौटिल्य के इस विचार से अवश्य ही परिचित था, अगर कौटिल्य के मुख से चन्द्रगुप्त को वृषल कहलाया है तो वहाँ उसने उसका प्रयोग सामाजिक अनादरता प्रकट करने के लिए किया होगा। वृषल के संबंध में एच.सी. सेठ का मत है कि यह यूनानी उपाधि 'बेसिलियम' का संस्कृत रूप है जिसका अर्थ राजा होता था। हेमचन्द्र रायचौधुरी[13] के अनुसार प्राचीन भारतीय साहित्य में वृषल का प्रयोग सामाजिक प्रतिष्ठा सूचित करने हेतु किया गया था राजनीतिक उपाधि के रूप में नहीं।

इस ग्रंथ के अनुसार हमें चन्द्रगुप्त मौर्य के साम्राज्य विस्तार की भी जानकारी प्राप्त होती है। 'मुद्राराक्षस' नामक ग्रंथ के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य हिमालय से समुद्र तक विस्तृत पृथ्वी का स्वमी बताया गया है।

**चन्द्रगुप्त व चाणक्य की कथा**

चन्द्रगुप्त और चाणक्य की कथा के संदर्भ में 'कथासरित्सागर' नामक ग्रंथ भी उल्लेखनीय है। इतिहासकारों का मत है कि इस ग्रंथ में उपलब्ध चन्द्रगुप्त–चाणक्य कथानक मूलतः गुणाढ्य की 'बृहत्कथा' में उपलब्ध सूचनाओं पर आधारित है। गुणाढ्च की 'बृहत्कथा' वर्तमान समय में उपलब्ध नहीं है इस कारण पूर्णतः स्पष्टतय यह कहना उचित नहीं होगा कि सोमदेव द्वारा इस ग्रंथ में किया वर्णन अत्यन्त विकसित रूप का परिचायक है जिससे हमें मौर्य की जानकारी भी प्राप्त होती है।

श्रीराम गोयल के अनुसार ब्राह्मण साहित्य में मौर्य काल से संबंधित इतिहास का निरन्तर विकास हुआ है जिसमें मुख्यपक्ष नंद, चाणक्य एवं चन्द्रगुप्त की कथाएँ हैं। नंदों व चन्द्रगुप्त मौर्य से संबंधित नवीन जानकारी 'मुद्राराक्षास' व 'विष्णु–पुराण' के ऊपर टीकाओं से प्राप्त होती है। इन टीकाओं में 'विष्णु–पुराण' का टीकाकार रत्नगर्भ तथा 'मुद्राराक्षस' नामक ग्रंथ से संबंधित 'मुद्राराक्षस' नामक व्याख्या टीका के लेखक धुण्ढिराज प्रमुख है। इन टीकाओं से वर्णित मौर्य इतिहास काफी व्यापक है जिसकी पुष्टि महादेव की 'मुद्राराक्षस कथा' अनन्तकवि की 'राक्षसपूर्व–कथा' तथा विष्णु–पुराण पर लिखी गई रविनर्तक उर्फ इर्वी चाक्यर की 'चाणक्य कथा' एवं 'पूर्वपीठिका' की रचानाओं से ज्ञात होता है।[14]

नंदों, चन्द्रगुप्त–चाणक्य से संबंधित कुछ फुटकर सूचनाएँ पतंजलि के 'महाभाष्य' एवं 'दशकुमारचरित' जैसे संस्कृत ग्रंथों से भी प्राप्त होती है।

**कल्हण की राजतरंगिणी**

ब्राह्मण साहित्यिक परम्परा में रचित परवर्ती ग्रंथों में 'राजतरंगिणी' भी उल्लेखनीय है जिसकी रचना कल्हण के द्वारा की गई थी। इस ग्रंथ में मौर्य इतिहास के संदर्भ में कुछ तथ्यात्मक और संदिग्ध सूचनाएं प्राप्त होती है। इस ग्रंथ में कल्हण ने अशोक को एक बौद्ध शासक के रूप में स्वीकार किया है जो कश्मीर प्रांत का शासक था। उसके अनुसार अशोक ने शुष्कलेत्र और वितस्तात्र की भूमि को स्तूपों से भर दिया था।

शंकर गोयल का विचार है कि कल्हण के अनुसार अशोक ने कश्मीर में अशोकेश्वर नामक एक शिव मंदिर का निर्माण कराया था। कल्हण ने 'राजतरंगिणी' में लिखा है कि अशोक आजीविक सम्प्रदाय को संरक्षण प्रदान करने वाला बौद्ध धर्मावलम्बी था जो अन्य धार्मिक सम्प्रदायों के प्रति भी अत्यन्त उदार नीति का अनुसरण करता था। 'राजतरंगिणी' में वर्णित इतिहास से ज्ञात होता है कि कल्हण ने ऐतिहासिक व्यक्तियों के मूल्यांकन में यथा संभव तथ्यात्मक एवं निष्पक्ष होने का प्रयत्न किया गया है।[15]

पुराणों के अतिरिक्त मौर्य शासकों के वंशानुक्रम की जानकारी हमें 'राजतरंगिणी' नामक ग्रंथ से भी प्राप्त होती है। 'राजतरंगिणी' के अनुसार कश्मीर पर अशोक के पश्चात वहाँ शासन करने वाला उसका पुत्र जालौक था जिसका उत्तराधिकारी उसने दामोदर[16]को बताया है।[17]

**कौटिल्य प्रशासन–तंत्र**

मौर्य काल के प्रारंभिक इतिहास–लेखन की दृष्टि से कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र' भी एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रंथ माना जाता है। कौटिल्य 'अर्थशास्त्र' को तीन जिल्दों में प्रकाशित आर.पी. कांगले द्वारा किया गया है जिनमें आलोचनात्मक संस्करण, अंग्रजी अनुवाद और परिचयात्मक अध्याय का भी समावेश हैं।[18] कांगले ने इस ग्रंथ के काल पर भी अपना मत व्यक्त किया है कि 'इस रचना को मागध की सत्ता हस्तगत करने में चन्द्रगुप्त को सहायता प्रदान करने वाले कौटिल्य की रचना न मानने का कोई उचित कारण नहीं है।'[19] उन्होंने अर्थशास्त्र के विभिन्न पहलुओं पर लिखे अपेक्षाकृत हाल के लेखकों पर विचार किया है।[20] टी. ब्यूरो ने चाणक्य और कौटिल्य में भेद किया है।[21] वर्तमान में अर्थशास्त्र पर एक विस्तृत पुस्तक–सूची है।[22]

वर्तमान समय में अनेक इतिहासकार इसकी रचना मौर्यकाल में हुई मानने में संदेह व्यक्त करते हैं तथा इसे मौर्यकाल के बाद लिखित कृति बताते हैं।[23] श्रीराम गोयल के अनुसार कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' की रचना तीसरी शती ई. के अन्त में कभी भी हुई माना है तथा इसका लेखक विष्णुगुप्त कौटिल्य था जो चन्द्रगुप्त मौर्य के प्रधानमंत्री चाणक्य से भिन्न व्यक्ति था तथा इसकी कुछ सामग्री मौर्यकालीन परम्पराओं पर आधृत प्रतीत होती है।[24]

आधुनिक इतिहासकार के.पी. जायसवाल, राधाकुमुद मुकर्जी, स्मिथ, टॉमस आदि विद्वानों ने इस ग्रंथ को मौर्यकालीन या इसके निकट रचित मानते हैं जिस कारण यह ग्रंथ मौर्यकालीन सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक इतिहास के साथ–साथ प्रशासन–तंत्र की जानकारी प्रदान करता है।

अधिकांश विद्वान मौर्य साम्रज्य की शासन–संस्थाओं के संबंध में विचार प्रस्तुत करने का मुख्य आधार कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' को ही मानते हैं उनका मानना है कि यह एक ऐसा विश्वसनीय साधन है जो विस्तृत रूप से मौर्य युग की शासन पद्धति पर प्रकाश डालता है। कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' में प्रतिपादित शासन संस्थाओं का संबंध मुख्यतया जनपदों के शासन से हैं। मागध साम्राज्य के विकास से पूर्व भारत में बहुत से स्वतंत्र जनपदों की सत्ता थी जो अधीनस्थ रूप में मौर्य साम्रज्य में भी कायम रहें।[25] श्रीराम गोयल का विचार है कि कौटिल्य के अनुसार मौर्य प्रशासन के प्रमुख अंग निम्न थे–

1. राजत्व व राजपद
2. राजकुमारों का प्रशासन में स्थान
3. अमात्य और मंत्रि–परिषद्
4. साम्राज्य का संगठन
5. गुप्तचर व्यवस्था
6. आर्थिक संगठन
7. न्याय व्यवस्था
8. सैन्य व्यवस्था आदि

**कौटिल्य का अर्थशास्त्र**

'अर्थशास्त्र' की रचना को लेकर मतभेद विधमान है परन्तु इस ग्रंथ से हमें मौर्यकालीन इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है। 'अर्थशास्त्र' के अनुसार राजा का आदर्श उच्च होना चाहिए। प्रजा के सुख में ही राजा का सुख होता है और प्रजा के दुःख में ही राजा का दुःख होता है।

कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' से ज्ञात होता है कि राज्य में 27 अध्यक्ष नियुक्त थे जिनका प्रमुख कार्य आर्थिक गतिविधियों का नियमन करना था। यह अधिकारी व्यापार–वाणिज्य, कृषि, कताई–बुनाई तथा खान आदि शिल्पों का नियमन–नियंत्रण करते थे।

प्राचीन भारत में कर–प्रणाली की दृष्टि से मौर्यकाल महत्त्वपूर्ण है। कौटिल्य ने किसानों, शिल्पियों और व्यापारियों से वसूल किए जाने वाले अनेक करों का वर्णन किया है। इन सम्पूर्ण करों के निर्धारण, वसूली और संग्रह के लिए दृढ़ और दक्ष संगठन की आवश्यकता थी। मौर्यों ने वसूली करने और ठीक से जमा रखने से अधिक महत्त्व कर–निर्धारण को दिया था। समाहर्त्ता कर–निर्धारण का सर्वोच्च अधिकारी होता था और सन्निधाता राजकीय कोषागार और भंडागार का संरक्षक होता था। राज्य का सन्निधाता की अपेक्षा समाहर्त्ता से चलते जो नुकसान होता था उसे अधिक गंभीर माना जाता था। वास्तव में, कर–निर्धारण का ऐसा विशुद्ध संगठन पहली बार मौर्यकाल में ही देखा जाता है। 'अर्थशास्त्र' में उल्लेखित करों की लंबी सूची मिलती है। यदि ये सारे कर वास्तव में वसूल किये जाते होंगे तो प्रजा के पास निर्वाह के लिए नाममात्र भी शेष नहीं रहा होगा।[26]

**निष्कर्ष**

सारांशतः मौर्य युग के आधुनिक इतिहास–लेखन में ब्राह्मण साहित्य स्रोत सामग्री का अविस्मरणीय योगदान है। इन स्रोतों के माध्यम से हमें मौर्य शासकों की शासन अवधि के साथ वंशावली, 'मुद्राराक्षस' ग्रंथ के आधार चन्द्रगुप्त मौर्य का इतिहास, नंद–चाणक्य–चन्द्रगुप्त से संबंधित कथाएँ की जानकारी प्राप्त होती है। 'राजतंरगिणी' के अनुसार बौद्ध शासक अशोक ने कश्मीर पर शासन किया था तथा वह समस्त धार्मिक सम्प्रदायों के प्रति उदार था। 'अर्थशास्त्र' नामक ग्रंथ की रचना को लेकर इतिहासकारों में मतभेद है परन्तु कुछ सामग्री मौर्ययुगीन है। इसी ग्रंथ के आधार पर हमें प्रशासनिक–तंत्र की जानकारी तथा साथ ही मौर्यों द्वारा स्थापित आर्थिक गतिविधियों का नियमन भी ज्ञात होता है। निष्कर्षतः ब्राह्मण साहित्यिक स्रोत सामग्री मौर्यकालीन आधुनिक इतिहास–लेखन हेतु सहायक सिद्ध दृष्टिगत है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**


1. *गोयल, श्रीराम : प्राचीन भारत (320 ई. तक), जोधपुर, 2007, पृ. 187*
2. *थापर, रोमिला : अशोक और मौर्य साम्राज्य का पतन, दिल्ली, 2010, पृ. 181–83*
3. *पार्जिटर, एफ. ई.: दि पुराण टैक्स्ट्स ऑव दि डायनेस्टीज ऑव दि कलि एज, वाराणसी, 1962, पृ. 29*
4. *पार्जिटर, एफ. ई. : दि पुराण टैक्स्ट्स ऑव दि डायनेस्टीज ऑव दि कलि एज, वाराणसी, 1962, पृ. 28*
5. *सरकार : सलेक्ट इंस्क्रिप्शन्स बेयरिंग आन इंडियन हिस्टरी एंड सिविलीजेशन, कलकत्ता, 1942,पृ. 79*
6. *शीलुस्की : ला लेजेंद द लाम्परर अशोक,पैरिस, 1923, पृ. 281*
7. *पार्जिटर, एफ. ई. : पूर्वो, पृ. 28–29*
8. *गोयल, श्रीराम : प्राचीन भारत (320 ई. तक), जोधपुर, 2007, पृ. 593*
9. *थापर, रोमिला : अशोक और मौर्य साम्राज्य का पतन, दिल्ली, 2010, पृ. 194–95*
10. *गोयल, शंकर : प्राचीन भारत का आधुनिक इतिहास–लेखन, जोधपुर, 2000, पृ. 74*
11. *रायचौधुरी, हेमचन्द्र : एज ऑफ नंद एण्ड मौर्य, दिल्ली, 1988, पृ. 141*
12. *गोयल, श्रीराम : प्राचीन भारत (320 ई. तक), जोधपुर, 2007, पृ. 272*
13. *रायचौधुरी, हेमचन्द्र : एज ऑफ नंद एण्ड मौर्य, दिल्ली, 1988, पृ. 140*
14. *गोयल, शंकर : प्राचीन भारत का आधुनिक इतिहास–लेखन, जोधपुर, 2000, पृ. 74–75*
15. *गोयल, शंकर : प्राचीन भारत का आधुनिक इतिहास–लेखन, जोधपुर, 2000, पृ. 75*
16. *राजतरंगिणी, 1.108–53*
17. *थापर, रोमिला : अशोक और मौर्य साम्राज्य का पतन, दिल्ली, 2010, पृ. 183*
18. *कांगले, आर. पी.:दि कौटिलीय अर्थशास्त्र, बंबई, 1965*
19. *कांगले, आर. पी. :दि कौटिलीय अर्थशास्त्र, बंबई, 1965, पृ. 106*
20. *कांगले, आर. पी.: सम रिसेंट वर्क ऑन दि कौटिलीय अर्थशास्त्र, जेएएस, बंबई,1968–69, पृ.227–38*
21. *ब्यूरो, टी. : चाणक्य एंड कौटिल्य, एबीओआरआई, 1968, पृ. 13–17*
22. *स्टर्नबक, एल. : बिब्लियोग्राफी आफ कौटिलीय अर्थशास्त्र, होशियारपुर, 1973*
23. *गोयल, शंकर : हिस्ट्री राइटिंग ऑफ अर्ली इंडिया, जोधपुर, 1996, पृ. 94–99*
24. *गोयल, श्रीराम : कौटिल्य एण्ड मेगास्थेनिज, मेरठ, 1985, अध्याय 1–2*
25. *गोयल, श्रीराम : प्राचीन भारत (320 ई. तक), जोधपुर, 2007, पृ. 186–87*
26. *शर्मा, रामशरण : प्रारंभिक भारत का परिचय, हैदराबाद, 2018, पृ. 182–83*